



RAINBOW SATHI • ரெனபோ சாதி • ரெயின்போ சாத்தி • ரெயின்போ சாத்தி • ரெயின்போ சாத்தி • ரெயின்போ சாத்தி • ரெயின்போ சாத்தி

RAINBOW SATHI • ரெனபோ சாதி • ரெயின்போ சாத்தி • ரெயின்போ சாத்தி • ரெயின்போ சாத்தி • ரெயின்போ சாத்தி • ரெயின்போ சாத்தி

SPECIAL ISSUE

RAINBOW SATHI

ரெனபோ சாதி

Mastering The Skills

KEEP LEARNING TO MOVE AHEAD

हुनर पर महारत

हम सीखेंगे और आगे बढ़ते रहेंगे



TEAM Work

Year 5, Issue 20
Special Issue

EDITOR IN CHIEF
BHASHA SINGH

ADVISORY BOARD

T.M. KRISHNA
K. LALITHA,

GEETA RAMASWAMY
K. ANURADHA

EDITORIAL BOARD

CHANDA
(DELHI)



SAHITYA
(HYDERABAD)



SHIVAM
(PATNA)



S KUMAR
(HYDERABAD)



AMBIKA, DEEPTI
BEZWADA WILSON

SUMMI MUNIR, DELHI



DEEPAK AMAN, DELHI



SABITHA, HYDERABAD



A KUMAR, HYDERABAD



NAGA LAXMI, HYDERABAD



BHAVANI, CHENNAI



ARUN KUMAR, PATNA



CHAMPA KUMARI, PATNA



SOMNATH CHAUHAN, PUNE



CHILD JOURNALIST

SAVITRI, BANGALORE



KEERTHANA, BANGALORE



SUBHASHREE, KOLKATA



KABITA, KOLKATA



RIYAZ ANSARI, PATNA



CHANDA KUMARI, PATNA



AMITA KUMARI, PATNA



ASHA KUMARI, PATNA



SHERNISHA, CHENNAI



CITIZEN JOURNALIST

ARTI SINGHASAN, DELHI

DIVYA, HYDERABAD

CHAKRAVARTHY KUNTOLLA, HYDERABAD

PRIYADHARSHINI, CHENNAI

JOYTI KUMARI, PATNA

AMRUTA, BANGALORE

KANCHAN PASWAN, KOLKATA

SUPPORT TEAM

PRIYANJALI
KOLKATA

SHREETANJALI
DELHI

SABARITHA
CHENNAI

JAYAKAR G
BENGALURU

POOJA
PUNE

KIRANTHI KIRAN &
SAMAD S.A
HYDERABAD

NEHA TIGGA
RANCHI

ANSHUL RAI
PATNA

Design:

ROHIT KUMAR RAI

Editor's Column

हम बोले दुनिया सुने...

दोस्तो

कोरोना काल की दूसरी लहर बहुत मारक रही, हमने अनगिनत भारतीय नागरिकों को खोया। देश बहुत बड़े संकट से निकला, हालांकि अब भी हम सब सतर्क हैं। सारी जरूरी सावधानियां बरत रहे हैं, एक जागरूक भारतीय की तरह। इस दौरान हम भी होम्स में ही रहे, यहीं से हमने अपनी ऑनलाइन पढ़ाई जारी रखी। पढ़ाई के साथ-साथ अपनी सारी ऊर्जा को झोंक दिया नई-नई चीजों को सीखने में, अपनी रचनात्मकता (क्रिएटिविटी) को नए पंख देने के लिए।

इसमें रेनबो होम्स के सभी सदस्यों और हमारे अध्यापकों ने हमारी खूब मदद की, हमें स्कूल की कमी से उबरने के तरीके बताए, जिससे हमारा हौसला बना रहा। अपने छोटे-छोटे समूह में कैसे हम खुद को सक्रिय रख सकते हैं, नए रंग भर सकते हैं, दूसरों को खुशी दे सकते हैं, अपने घरवालों के साथ संकट में कैसे खड़े हो सकते हैं- यह सब हमने अपने जीवन का हिस्सा बनाया। जिस तरह से हमने इस दौरान आर्ट एंड क्राफ्ट के अनगिनत पैटर्न सीखे—बॉल हैंगिंग हो या कार्ड बनाना—सबने अलग स्टाइल तलाशा, रोजमर्रा के खाने बनाए, साथ ही नई-नई डिश सीखी और सबको खूब खिलाई;

फुटबॉल और बाकी खेल सीखे, चिड़ियों को दाना-पानी देना-उनके लिए घर बनाना, गहने बनाना सीखा... यह लिस्ट बहुत लंबी है। लेकिन इसमें सबसे अच्छी बात यह रही कि बड़ी उम्र के छात्रों ने छोटे बच्चों को पढ़ाना और सिखाना सीखा। हम सब एक दूसरे को सिखाने और समझाने में एक्सपर्ट हो गए। यह एक बिल्कुल अलग ढंग का अनुभव था- नया सबक।

इससे हम न केवल परिपक्व हुए बल्कि हमें छोटी-छोटी चीजों और बातों की अहमियत पता चली। साथ ही, सिखाने के लिए कितने धैर्य की जरूरत होती है- इसका भी खूब अहसास हुआ। हमारे बीच बिल्कुल अलग ढंग का बंधुत्व और प्रेम विकसित हुआ।

रेनबो होम्स के जरिये हमने सीखा कि मुश्किल चाहे कितनी ही बड़ी क्यों न हो, हमें न तो उससे डर कर भागना है और न ही अपनों का साथ छोड़ना है। हम साल 2020 से लेकर अब तक- कोरोना महामारी से पूरी सावधानी बरतते हुए अपनी पढ़ाई और रचनात्मक कामों को आगे बढ़ा रहे हैं, क्योंकि हम दुनिया को दिखाना भी चाहते हैं कि हम खास हैं और हमारा नजरिया भी खास है। है न!!

हम लड़ेंगे, हम जीतेंगे !!!

We speak world listens

Friends

The second wave of COVID-19 this year has been very severe, and we have lost a big number of people. Country overcame a big crisis, although we all are still very alert. We are taking all necessary precautions, as any responsible Indian citizen should do. We all stayed at our respective Homes during this time and continued our online education from here. And, along with academics we also devoted our energy in learning new things and give new wings to our creative pursuits.

Our Rainbow Homes team and teachers helped us a lot. They taught us how to overcome the feeling of missing the schools and kept us encouraged. How we can keep ourselves engaged in small groups, fill life with new colours, give joy to others, stand with our family in times of crisis- we made this all a part of our lives. We learned different patterns off art and craft-

making wall-hangings, cards, jewellery, bird-feeders, bird homes; everyone discovered their own styles, we started cooking, preparing new dishes; few of us started practicing in sports... list goes long and long! Best part of all this was that elder children learned to teach young kids. We all became experts in teaching and explaining each other. This was entirely different type of experience- a new learning. This not only made us more mature but also got to learn importance of even the smallest things. We also realised that how much patience is needed to teach others. We developed a different type off bonding for each other.

Through Rainbow Homes, we have also learned that however big our problems might be, we shouldn't run away from them, nor should we leave our near and dear ones behind. Since March 2020 till now, we have been continuing with our studies as well as creative works while being fully alert to covid pandemic. We want to show the world that we are different, and so is our attitude as well. Isn't it!!

WE SHALL FIGHT, WE SHALL WIN!!!

माता

Patna

बहुत कुछ नया सीखने का मौका मिला

पटना में घरोंदा विकासार्थ रेनबो होम में 10वीं कक्षा में पढ़ने वाली आशा कुमारी ने अपने होम में रहने वाली तीन छात्राओं- दसवीं में पढ़ने वाली पूजा, 11वीं में पढ़ने वाली रानी कुमारी और नौवीं में पढ़ने वाली तनिशा कुमारी से बातचीत की और उनसे जानने की कोशिश की कि उन्होंने लॉकडाउन के दौरान क्या-क्या किया और क्या नई चीजें सीखीं।

लॉकडाउन में आप लोगों ने होम में रह कर क्या-क्या किया?



पूजा : जब मैं लॉकडाउन में होम में थी तो खुद से और ऑनलाइन पढ़ाई करती थी और मन लगाने के लिए अलग-अलग एक्टिविटी में हिस्सा लेती थी जैसे कि डांस, कराटे वगैरह।

रानी: लॉकडाउन में जब मैं होम में थी तो पढ़ाई की। मन नहीं लगा तो छोटे बच्चों को पढ़ाया और होम में सब की मदद की।

तनिशा: लॉकडाउन में होम में रह कर मैं छोटे बच्चों की मदद करती थी।

लॉकडाउन तो अब भी लगा हुआ है तो आप लोगों की पढ़ाई कैसे चल रही है?

इस पर पूजा ने जहां यह कहा कि वह टीवी पर डीडी बिहार चैनल देखकर और साथ ही ऑनलाइन पढ़ाई करती हैं, वहीं रानी भी टीवी के जरिये और टैबलेट पर ऑनलाइन पढ़ाई करती हैं। तनिशा अपनी पढ़ाई ऑनलाइन व किताबों से कर रही हैं।

लॉकडाउन में पढ़ाई के अलावा क्या नया सीखा?

पूजा ने लॉकडाउन में पढ़ाई के अलावा मिट्टी से मूर्ति बनाना सीखा, जबकि रानी ने लॉकडाउन में डांस, पेंटिंग, आर्ट एंड



क्राफ्ट सीखने में रुचि दिखाई और तनिशा ने भी पढ़ाई के साथ-साथ डांस, पेंटिंग और कविता लिखना सीखा।

लॉकडाउन में सब से अच्छा क्या लगा?

पूजा को यह अच्छा लगा कि होम में समर कैम्प चल रहा था। वहीं, रानी को इस बात की राहत थी कि बच्चों के घरों में भी राशन दिया जा रहा था। तनिशा को लॉकडाउन में छोटी बच्चियों को पढ़ाने में मजा आ रहा था।

कोरोना काल में कौन-सा दिन सबसे अच्छा रहा?

पूजा को सबसे अच्छा दिन 8 मार्च का लगा जब मदर्स डे मनाया गया और होम



की सारी मदर्स की उनके घर पर बात कराई गई और उनके सम्मान में प्रोग्राम भी आयोजित किया गया। रानी को सबसे अच्छा दिन वो लगा जब 10वीं और 11वीं की बच्चियों को पढ़ाई करने के लिए टैबलेट दिए गए। तनिशा को समर कैम्प में सबसे ज्यादा मजा आया।

लॉकडाउन का अनुभव कुल मिलाकर कैसा रहा?

पूजा: लॉकडाउन में हमारे होम में समर कैम्प लगा था तो मेरा मन लगा रहा। जब किसी से घर पर बात करना चाहती थी तो बात हो जाती थी। कोरोना से बचने के लिए हम हर नियम का पालन किया करते थे। होम में पता ही नहीं चला कि लॉकडाउन लगा हुआ है।

रानी: मैंने लॉकडाउन में बहुत कुछ सीखा और होम में अपनी बहनों के साथ समय बिताया। जब मुझे लगता कि मन नहीं लग रहा तो मैं अपनी बड़ी-छोटी बहनों को कुछ सिखाने बैठ जाती थी। हम लोग रोज कोरोना के नियमों का पालन किया करते थे।

तनिशा: लॉकडाउन में मैं अपनी बड़ी बहनों से कविता व कहानी लिखना, पढ़ना, समझना सीखती थी। होम में लॉकडाउन का पता ही नहीं लगता था।

आशा कुमारी, 10वीं, घरोंदा विकासार्थ रेनबो होम, पटना



Got to learn many new things

Asha Kumari of 10th std from Gharaunda Vikasarth Rainbow Home interviewed three other girls from her Home- **Pooja** of class X, **Rani Kumari** of class XI and **Tanisha** of class IX, and talked about their experiences during the lockdown and what new things were they able to learn.

What did you guys do while staying at Rainbow Home during the lockdown?

Pooja: During lockdown when I was at rainbow home, I studied by myself and through online classes too, and to engage myself, I participated in activities like dance

and karate.

Rani: When I was at rainbow home in lockdown, I used to study a lot. Rest of the time, I used to teach younger children and help others at the Home.

Tanisha: I used to help younger children at Rainbow Home during the lockdown.

Lockdown is still continuing, so how are you studying now?

To this, while **Pooja** said that she is studying through DD Bihar channel on TV as well as online classes, **Rani** also said that she is studying through TV and tablet. **Tanisha** said that she is

Pune

doing her studies online and on her own.

What did you learn apart from studying during lockdown?

Pooja learned to make idols from clay, while **Rani** I learned other things like dance, painting, art, and craft. **Tanisha** was active in dance, painting and writing poetry.

What did you enjoy most during the lockdown?

Pooja enjoyed the summer camp which was being organised at her Home itself. **Rani** was relieved that during the lockdown that ration was distributed to their families as well. **Tanisha** was happy to teach little girls of her Home.

Which was the best experience for you of the Corona lockdown period?

For **Pooja**, the best day was when on International Women's Day on 8th March Home mothers were felicitated and our sisters were made to talk to their families. A special program was also organized. For **Rani**, best day was the one when girls of 10th and 11th classes got tablets to study. **Tanisha** enjoyed summer camp the most.

How was your overall experience of the lockdown?

Pooja: During the lockdown, a summer camp was organized in our Home. That was engaging for me. Whenever I felt like talking to my family, it was arranged. I followed every rule to avoid corona. I didn't even realize of lockdown at home.

Rani: I learned a lot during lockdown and spent time with my home sisters. When I didn't feel good, I used to teach elder and younger sisters at home. We would always follow the rules of lockdown.

Tanisha: In lockdown, I learned to write, read and understand poetry and stories from my elder sisters. It didn't feel like lockdown at Rainbow Home.

Asha Kumari, Xth Std, Gharaunda
Vikasaarth Rainbow Home, Patna

रद्दी से रची सुंदरता

लॉकडाउन में हम होम में ही रहे। होम में रह कर

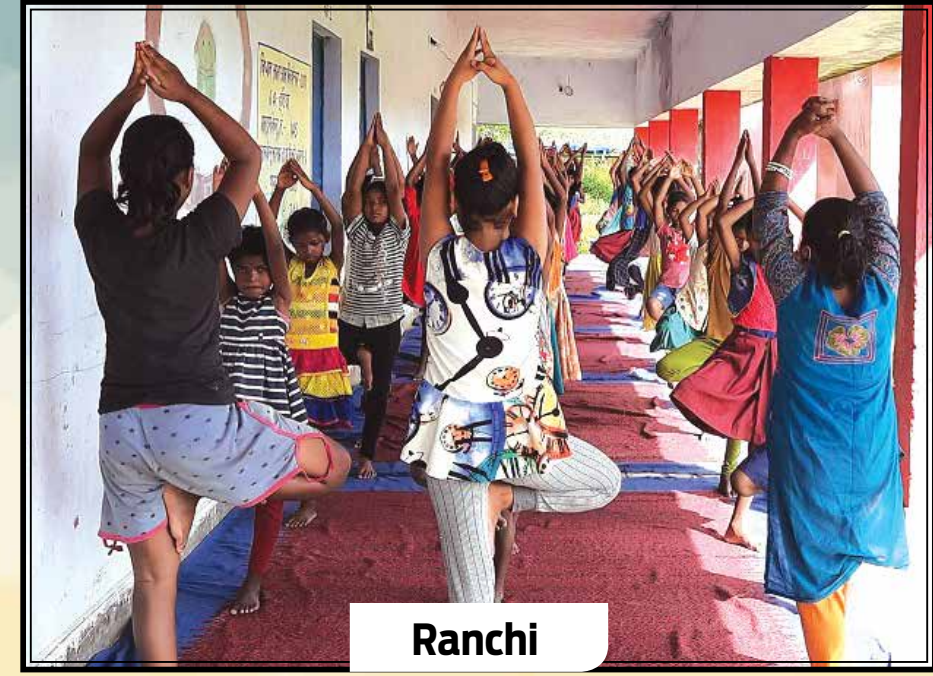
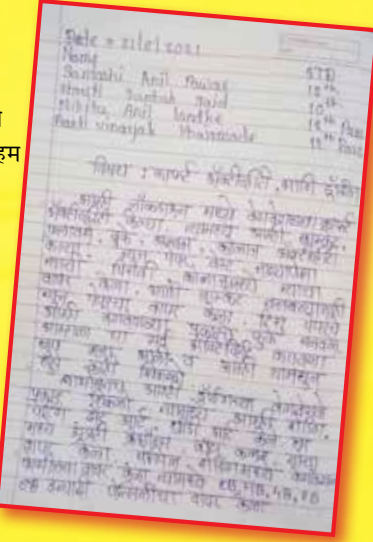
हमने अलग-अलग तरीके की क्राफ्ट एक्टिविटी की। इसमें हम टोकरी, फूलों का गुलदस्ता, और फोटो कोलाज बनाना सीखते थे। हमने अनुपयोगी सामग्री जैसे अखबार से कागज की थैली बनाई। टोकरी बनाने के लिए भी हमने पुराने अखबार को इस्तेमाल किया। हमने टिश्यू पेपर से अलग अलग प्रकार के फूल बनाए। लॉकडाउन में यह सब एक्टिविटी करते

समय बहुत मजा आया। इन सब एक्टिविटीज को करते समय हमने बहुत कुछ सीखा। हमने ड्राइंग के भी अलग-अलग तरीके सीखे जैसे शेडिंग, पेंटिंग, जेन्ट आर्ट, 3डी आर्ट, इसमें हम क्रेयॉन, वाटर कलर, स्केच कलर आदि का इस्तेमाल करते थे। पेंसिल जो शेडिंग में इस्तेमाल करते थे वो भी अलग-अलग प्रकार की थी। जैसे 2बी, एचबी, 4बी, 8बी, 6बी, इत्यादि। यह अलग दुनिया थी जिसे समझने में हमें बहुत अच्छा लगा।

From waste to beautiful

We stayed at Home during lockdown. We used to do different types of craft activities in lockdown. We learned making baskets, bouquets of flowers, and photo collage. We made paper bags from waste newspapers. We also used old newspaper to make the basket. We made different types of flowers with tissue paper. It was a lot of fun while doing all this activity in lockdown. We learned many things while doing all these activities. We also learned different types of drawing like shading, painting, gent art, 3D art. In this we used wax colour (crayons), water colour, sketch colours. The pencils used for shading were also of different types like 2B, HB, 4B, 8B, 6B, etc. This was really fun and different experience altogether. It was so important to learn a different aspect.

Santoshi Anil Pawar 12th, Shruti Santosh Said 10th, Nikita Anil Londhe 12th, Arti Vinayak Khairmode 12th, Mangalwar Peth Home, Pune



Ranchi

पढ़ाई के साथ कई चीजें सीखीं

हम सभी बच्चे रेनबो होम कुटे में रहते हैं और यहाँ हम सबकी सारी सुविधा का ख्याल रखा जाता है जैसे- पढ़ाई, लिखाई, खाना-पीना, रहने-सोने, खेल और अन्य आवश्यक सामग्री की व्यवस्था। हम सभी बच्चे नियमित रूप से स्कूल जाते थे सब के साथ मिल कर पढ़ाई-लिखाई और खेल-कूद करते थे। लेकिन जब से कोरोना वायरस बीमारी आई है, हमारा स्कूल बंद हो गया। कोरोना वायरस देश में बहुत तेजी से फैलने लगा और राज्यों में लॉकडाउन लगा दिया गया। इस लॉकडाउन के दौरान हम सभी बच्चे होम में ही रहे और होम में ही पढ़ाई करने लगे और पढ़ाई के साथ के साथ पेंटिंग करना, आर्ट एंड क्राफ्ट में नई-नई चीजें बनाना, मास्क बनाना और खाना बनाना भी सीखा। पढ़ाई के बाद खाली समय में हम लोगों ने चावल, चिकन, पुलाव, आलू, पनीर की सब्जी, बिरयानी आदि बनाना सीखा। साथ ही यूट्यूब में वीडियो देख कर और दीदी की मदद से सूजी के गुलाब जामुन, रसगुल्ला और आइसक्रीम बनाना भी सीखा।

मोहिनी लाम्बा कक्षा VII (बाल पत्रकार), सृष्टि टोप्यो कक्षा V, अंजली कुमारी कक्षा V, पूजा कुमारी कक्षा V, उषा कुमारी कक्षा IV, रेनबो होम, कुटे, रांची

Learned a many things along with studies

We all stay at Rainbow Home Kute, Ranchi and here all our needs and facilities are taken care of, such as education, food, lodging, sports and other necessities. Earlier all of us used to go to school regularly and will study and play games together. But since the coronavirus pandemic has come, our school have been closed. We have stopped going to school. Coronavirus started spreading very fast in the country and all states imposed a complete lockdown. During this lockdown, all of us stayed at rainbow home and started studying on our own. Along with studies, we also learned painting, making new things in art and craft, making masks and cooking. After studies, in our free time, we used to learn to make rice, chicken, pulao, potato, paneer vegetables, biryani etc. We also tried cooking suji Gulab jamun, rasgulla and ice cream by watching videos on YouTube and with the help of didis.





RAINBOW SATHI • రేనబో సాథి • రెయిన్ బో సాథి • గెయిన్ పో సాత్తి • ర్నాంబో సాథి • రైనబో సాథి

RAINBOW SATHI • రేనబో సాథి • రెయిన్ బో సాథి • గెయిన్ పో సాత్తి • ర్నాంబో సాథి • రైనబో సాథి

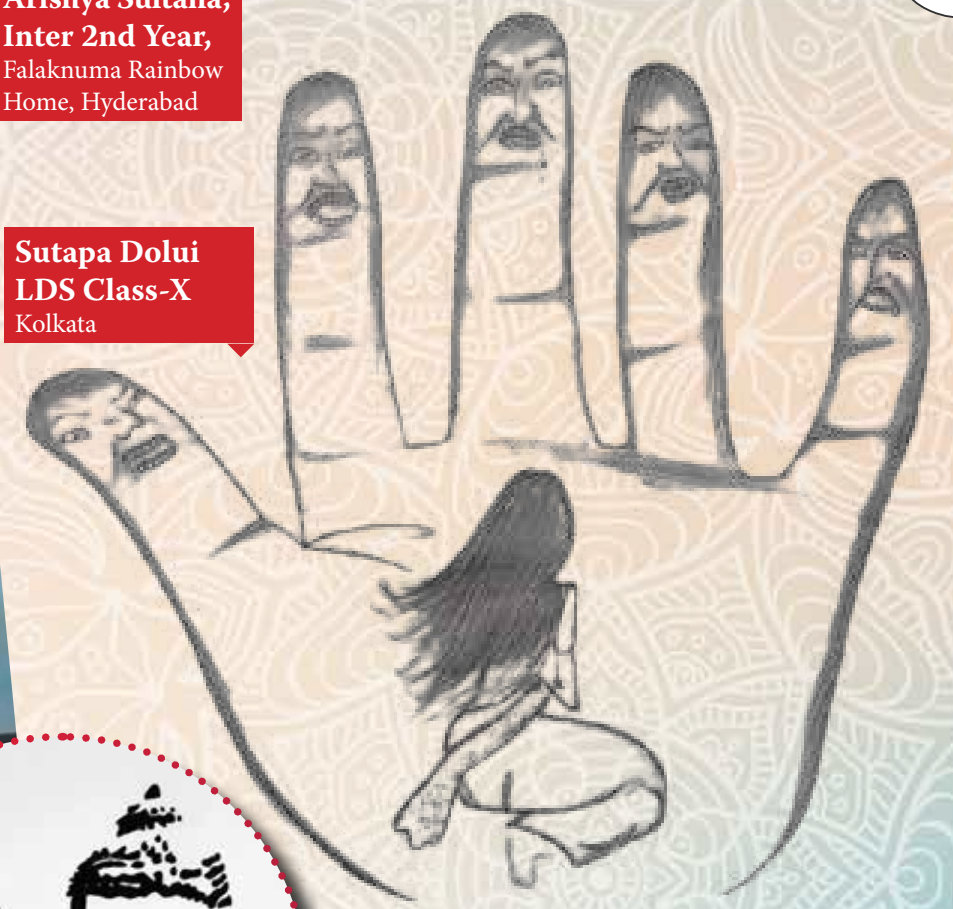
A new world of colours

एक रंग-बिरंगी नई दुनिया



Arishya Sultana,
Inter 2nd Year,
Falaknuma Rainbow Home, Hyderabad

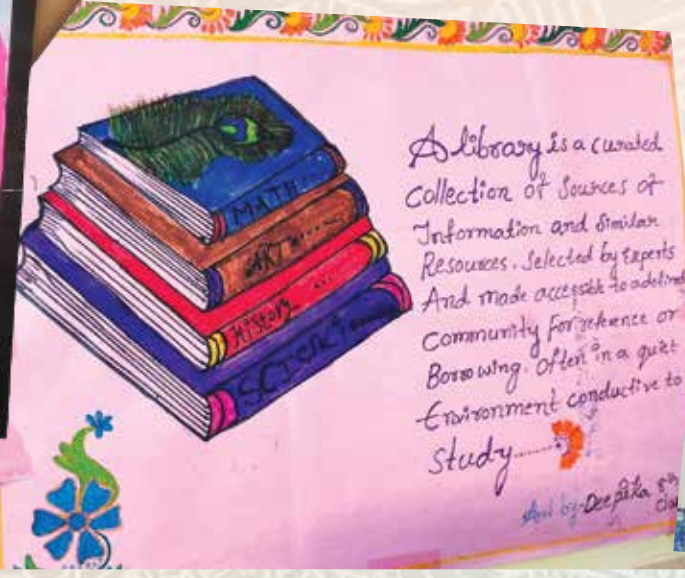
Sutapa Dolui
LDS Class-X
Kolkata



Vijay, PUC II,
Rainbow Home, Bengaluru



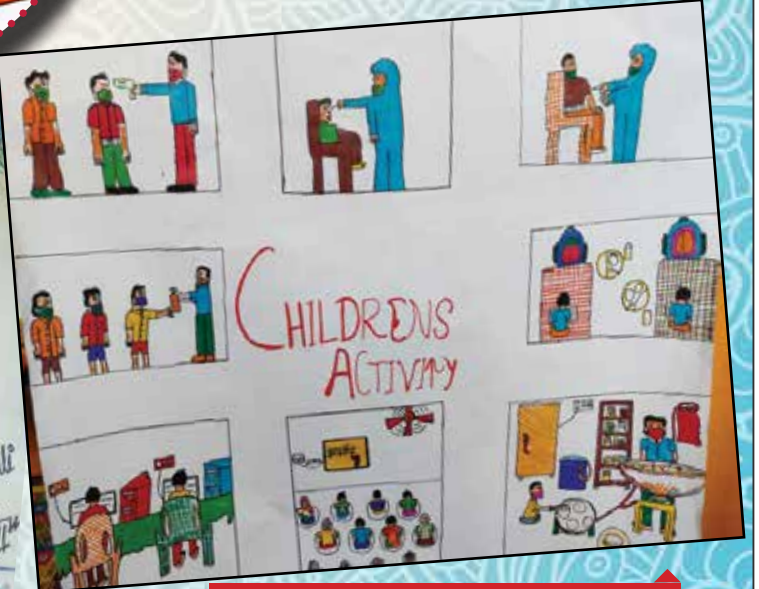
S.Anjali Kumari
Sing 8th Class
SRD, Hyderabad



T.Deepika 8th Class
SRD, Hyderabad



Anjali, Class VII,
Gharounda Rainbow Home, Patna



Vishal, 8th Class,
Muskurahat Sneh Ghar, Amla Tola, Patna



Preparing to face mainstream Life skills in the lives of 'Our Children'



important for a better re-integration. Starting from hygiene aspects to showcase resilience in their workplaces, life skills have greater role to play in the lives of our children in the homes. Getting accepted by peers, ease of going with mainstream and thereby sustaining themselves as individuals are some of the immediate outcomes of the life skills.

On a long run as we dream for contributory citizens, life skills play a huge role in enriching the process of democracy while our Young Adults can participate in the discussions as an influential community member having awareness on their rights & entitlements and confident to clearly articulate things.

In our context, I feel that life skills can play a vital role in making our children in the homes & communities a better human being. For this, following are the broader areas to achieve short-term and long-term outcomes of life-skills:

- ▶ Focus on certain habit formations such as maintaining hygiene, self-grooming, etiquettes of dinning, classroom, etc.
- ▶ Unlearning: Unlearning is largely certain behaviors that are seen as normal while living on the streets, such as aggression, use of specific language (otherwise not acceptable), etc. This is extremely important as they become barriers for getting accepted by.
- ▶ Self-awareness & Sexuality: Most of the children that we work with have already faced hardships while they were living on the streets.

In day-to-day life, we engage & perform things that are 'expected' & 'supposed' to be delivered by each one of us, be it as a student or child, adult or any other life roles that we are in.

While we try to fulfill all of these, the question is how well we are able to face & deal these situations of life. Here comes the role of 'life skills' that helps us in dealing with these life situations, demands & challenges in a much smoother way and with much self-awareness.

We often ignore the importance of life skills as we focus more on mainstream education. Life skills and Education complement each other in making a child's personality. While Education helps in building knowledge & careers; Life skills helps in balancing emotions, translating the knowledge into smooth practice & succeed in their careers.

However, in the process of bringing children into the mainstream fold, acquiring certain skills, behaviors & attitudes are

The instances & intensity of the abuse & discrimination see or faced by them impacted their emotional wellbeing too. Therefore, this is important to bring them back to the innocence of the childhood and give them assurance & awareness in building their self-awareness. Also, it is important to streamline their understanding on sexuality in an age-appropriate manner. This will not only give scientific awareness, but also help them to regain confidence & eventually build responsible relationships.

- ▶ Preparing life for outside society: In order to go back to the society and lead an independent life, certain abilities like communicate, collaborate, negotiate and necessary adjustments are key for balancing out life in the outside society. Therefore, preparing our Young Adults to face the society in aspects of job preparation, personality development and communication skills would have lasting impact.

Therefore, working with our children & Young Adults on this area of life skills is equally important as Education in molding the personalities and careers of 'our children'. I hope we can together strengthen the area of life skills in our programme to help our children learn these impactful & lifechanging skills.

Srilatha Morampudi,
Senior Manager - Programmes
Rainbow Homes, Hyderabad

असल जिंदगी की तैयारी 'हमारे बच्चों' के जीवन के जीवन कौशल

रोजमर्रा की जिंदगी में हम कई तरह के काम करते हैं। जीवन में हमारी कई भूमिकाएं होती हैं- एक छात्र की, एक बच्चे की या एक वयस्क की, और हमारी उन भूमिकाओं के अनुरूप ही हमारी जिम्मेदारियां भी होती हैं और हमसे अपेक्षाएं भी।

हम उन अपेक्षाओं पर खरा उतरने की कोशिश भी करते हैं। देखना यह भी होता है कि हम जीवन की सच्चाइयों का सामना करने और उनसे निबटने के लिए खुद को कितना तैयार कर पा रहे हैं। जीवन कौशल, जिसे हम 'लाइफ स्किल्स' भी कहते हैं, इस मामले में अहम भूमिका निभाते हैं और हमें मुश्किल स्थितियों, अपेक्षाओं और चुनौतियों से सहज तरीके से निबटने में मदद देते हैं।

लेकिन हम अक्सर जीवन कौशल की अहमियत को नजरअंदाज कर देते हैं और सिर्फ किताबी पढ़ाई पर ही ध्यान केंद्रित कर देते हैं। ध्यान रखने की बात यह है कि अकादमिक पढ़ाई और जीवन कौशल एक-दूसरे के पूरक हैं और वे मिलकर किसी बच्चे का व्यक्तित्व विकसित करते हैं। अकादमिक शिक्षा से ज्ञान मिलता है और अच्छा कैरियर भी। वहीं जीवन कौशल सहज बुद्धि विकसित करने, मानसिक मजबूती में और ज्ञान को व्यवहार्य बनाकर उससे जीवन में सफलता हासिल करने में मदद देते हैं।



बच्चों को मुख्यधारा के क्षेत्र में लाने की प्रक्रिया में उनके लिए कुछ जीवन कौशल हासिल करना और व्यवहार व प्रवृत्ति में निखार लाना बेहद उपयोगी सिद्ध होता है। फौरी तौर पर देखा जाए तो अपने अगल-बगल की साफ-सफाई का ध्यान रखने से लेकर काम की जगहों पर लचीलापन दिखाने तक के तमाम जीवन कौशल हमारे होम में रहने वाले बच्चों के जीवन में कुछ न कुछ भूमिका निभाते हैं। इन्हीं की बदौलत ये बच्चे जल्दी दोस्त बना लेते हैं, मुख्यधारा में सहजता से घुलमिल जाते हैं और इस तरह से एक व्यक्ति के तौर पर अपनी जगह बना लेते हैं।

जब हम यह सपना देखते हैं कि बच्चे योगदान करने वाले नागरिक बनें, तो इसमें जीवन कौशल की बड़ी भूमिका होती है, वे लोकतांत्रिक प्रक्रिया को समृद्ध करते हैं। हमारे युवा विभिन्न बहसों में एक ऐसे प्रभावशाली समूह के तौर पर हिस्सा ले सकते हैं, जो अपने अधिकारों व पात्रताओं के बारे में जागरूक हैं और तमाम बातों को बेहद स्पष्टता के साथ सामने रख सकते हैं।

लिहाजा हमारे संदर्भ में भी, मेरा यह मानना है कि जीवन कौशल होम के हमारे बच्चों को बेहतर इंसान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसी इरादे से जीवन कौशल के कुछ अल्पावधि और कुछ दीर्घावधि नतीजे हासिल करने के लिए हम निम्न बातों पर गौर कर सकते हैं-

- ▶ कुछ खास आदतों को अपनाए पर ध्यान देना, जैसे कि साफ-सफाई, खुद को अच्छे से रखना, खाने-पीने व क्लासरूम के तौर-तरीके सीखना, आदि
- ▶ कुछ ऐसी आदतों को छोड़ना जो सड़कों पर रहने वालों के जीवन में सामान्य सी मानी जाती हैं, जैसे कि आक्रामक होना, बोलचाल में खराब भाषा का इस्तेमाल करना, वगैरह। यह इसलिए भी जरूरी है क्योंकि इन आदतों को छोड़ने से हमारी स्वीकार्यता बढ़ेगी।

▶ सेक्सुएलिटी व खुद को समझना: जिन बच्चों के साथ हम काम करते हैं, उनमें से ज्यादातर सड़कों पर रहते हुए जीवन में पहले ही खासी मुश्किलों का सामना कर चुके होते हैं। शोषण व भेदभाव की जिस तरह की घटनाओं का सामना उन्होंने किया होता है, उसका असर उनकी भावनात्मक सेहत पर भी काफी पड़ता है। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि उन्हें बचपन की मासूमियत फिर से लौटाई जाए और साथ ही उनमें आत्म-जागरूकता विकसित करने के लिए जरूरी भरोसा भी कायम किया जाए। जरूरी यह भी है कि उम्र के हिसाब से उनमें सेक्सुअलिटी को लेकर एक जागरूक समझ खड़ी की जाए। इससे उनमें वैज्ञानिक सोच तो पैदा होगी ही, साथ ही उनमें जिम्मेदार रिश्ते कायम करने के लिए आत्मविश्वास भी बनेगा।

▶ बाहर समाज के लिए जीवन को तैयार करना: होम से बाहर निकलकर समाज में जाने और एक आजाद जीवन जीने के लिए कुछ खूबियां विकसित करनी चाहिए, जैसे कि लोगों से संवाद करने, सामंजस्य बनाने, तालमेल करने और जरूरी समायोजन करने की कला सीखी जाए क्योंकि बाहर समाज में संतुलन बनाने के लिए यह बहुत जरूरी है। लिहाजा हम अपने युवा बच्चों को रोजगार पाने, व्यक्तित्व विकसित करने और संवाद की कला के विभिन्न पहलुओं से वाकफ कराते हैं क्योंकि उनका दूरगामी असर होता है।

इसीलिए होम के बच्चों व युवाओं के साथ जीवन कौशल पर काम करना उतना ही जरूरी है जितना पढ़ाई पर क्योंकि वे बच्चों के व्यक्तित्व व कैरियर दोनों को ढालते हैं। हमें उम्मीद है कि हम अपने प्रोग्राम में लाइफ स्किल्स यानी जीवन कौशल के क्षेत्र को और मजबूत बना सकते हैं।

श्रीलता मोरमुपदी,

सीनियर मैनेजर - प्रोग्राम्स, रेनबो होम्स, हैदराबाद

Ranchi

फुटबाल है हमारा पसंदीदा खेल

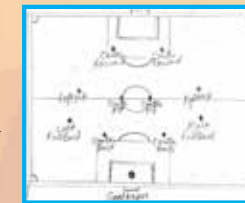


लॉकडाउन के दौरान, पढ़ाई के बाद खाली समय में हमने ग्रुप बना कर फुटबॉल खेलना शुरू किया। हम लोग और भी खेल खेलते हैं लेकिन फुटबॉल हमारा पसंदीदा खेल है। इस खेल में हम ज़्यादा रुचि रखते हैं। इस खेल में दोनों टीमों में 11-11 खिलाड़ी होते हैं और इनमें से एक-एक गोलकीपर होता है। वह फुटबाल को गोल पोस्ट में आने से रोकता है। गोलकीपर के अलावा हर टीम में डिफेंडर, मिड फील्डर और फारवर्ड पोजीशन पर खिलाड़ी खेलते हैं। खेल में सभी खिलाड़ियों की अहम भूमिका होती है। सबकी जिम्मेदारी फुटबाल को अपनी तरफ के गोलपोस्ट में जान से रोकने और सामने वाली टीम के गोल पोस्ट में डालने की होती है। हम बच्चों को यह खेल आगे बढ़ाने, कुछ करने का मकसद देता है। हम सब इस खेल को सीखकर आगे मुकाबलों में उतरना चाहते हैं।

अनिकेत लोहरा कक्षा VI (बाल पत्रकार), मुन्ना मुंडा, कक्षा V, मौजू महली, कक्षा VII, संजय टोप्यो, कक्षा VII, ऋषि उरांव, कक्षा VII, स्नेह घर बरियातू, रांची

We Just Love Football

During lockdown, after studies during our free time we started playing football by making teams. We used to play other games as well, but football is our favorite sport. We have more interest in this game. In this game there are eleven players in each team and out of them there is goalkeeper in each team. He stops football from going inside the goal post. Defenders, midfielders and forwards are the other lines of defense and attack in each team. But, every player has an important role in the game. Everyone is responsible to defend their goal post and attack the goal post of the opposite team. The sport gives all of us a goal to move forward and do something. We also want to become good footballers by participating in matches and competitions.



Pune

लॉकडाउन में पैशन-गुरु क्लास भी

हमने लॉकडाउन में पहली बार ऑनलाइन क्लास की जो अब भी चल रही है। ऑनलाइन क्लास के साथ हम और एक्टिविटीज भी करते थे। हमने खाना बनाना (कुकिंग) सीखी जैसे चॉकलेट केक, सलाद, बिरयानी बनाना सीखा और हमें यह सब बनाने में बहुत मजा आया। हमने मैदानी खेल भी सीखे जैसे क्रिकेट, कबड्डी, खो-खो, कराटे, फुटबॉल और बैट कर खेलने वाले खेल (इंडोर गेम्स) भी खेले जैसे कैरम, लूडो, शतरंज, 4 चिट्टी (राजा, मंत्री, चोर, सिपाही)। खेल खेलने और होम में रहने में हमें लॉकडाउन के दौरान बहुत मजा आया। लॉकडाउन के कारण ही हम यह सब चीजें कर पाए। कोरोना काल में हमने रोज योग भी किया जिससे हम अपने आप को सेहतमंद रख सके। योग से प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। प्राणायाम भी करते हैं जिससे मानसिक और शारीरिक तनाव भी दूर होता है। इसके साथ-साथ लॉकडाउन में पैशन गुरु क्लास भी की जिसमें चित्रकला, डांस, संगीत, फिटनेस क्लास होती थी जिसमें बहुत मजा आता था।

Passion Guru classes in lockdown

We did online classes for the first time in lockdown and they are still going on. We used to do other activities along with online classes. In which we learned cooking, we made chocolate cake, salad, biryani etc. and we had so much fun while cooking all these. We also learned field sports like cricket, kabaddi, kho-kho, karate, football. We played indoor games like carrom, ludo, chess, 4 chits (king, minister, thief, soldier). During lockdown, we had a lot of fun playing sports and staying at rainbow home. During this period, we also did daily yoga so that we could keep ourselves healthy. Yoga increases immunity. We also did Pranayama, due to which mental and physical stress is removed. Along with this, we also attended Passion Guru classes in which there used to be painting, dance, music, fitness classes which was a lot of fun.

Mangal Kale 12th, Monika Jagdale 12th, Shraddha Pawar 10th, Mangalwar Peth Home, Pune

Bengaluru

Art, craft and cooking among other things to learn

Children learnt many creative things during lockdown period like making handbags, purses, earrings, cards, greeting cards, flowers, paper frog, toys like airplane, rockets, etc. and photo frames and mask with very enthusiasm. In art class we made pencil sketches of famous personalities like Dr. Abdul Kalam and Dr. B.R. Ambedkar and sketches on nature, flowers, dolls and other human figures.

On World Environment Day, as responsible citizens we planted trees around our campus and conducted painting competitions about nature, flowers and issues related to the environment. We also learnt to cook many new dishes. We made a cake for our home's sister birthday. We also learnt to make the dishes like dal, sambar, karamani, biryani, kebab, egg rice, poori, chapati, etc.

We also choreographed a dance program for our senior Sherly's birthday. The program went full of fun and all the students participated with full enthusiasm.

On digital platforms, we all learnt typing and computer basics like MS Office. We also have a library for peaceful study and educate ourselves in our campus. During lockdown, we learnt many stories and recited them to our juniors. We used to do yoga daily to be



Sowmya G, 10th std,
Rainbow Home, Bengaluru

strong and healthy. Some girls started teaching young children to help them in studies.

Students also organized quiz for all children about freedom fighters, general knowledge and science so that we can also recall and remember. Sports for young children were conducted by the elder ones. The seniors played outdoor games like throw ball, kho kho, kabaddi.

We used to celebrate family day and birthday celebration at the end of month by cutting the cake and eating special dishes. Activities like dance, drama, jokes were frequently organized. We attended sessions about caste and gender, life exposure, newspapers, vaccines etc. They all were very helpful in getting extra knowledge. We celebrated festivals, special days and birth anniversaries of historical persons.

Due to pandemic, we also got to learn safe hygiene practices.

Chandan, Laksmi K, Mani, Dhanlaxmi, Rosy, Sandya, Geetha, Aishwary, Asha K, Amuda,
ANC Rainbow Home, Bengaluru



आर्ट व क्राफ्ट और कुकिंग के अलावा भी बहुत कुछ

बच्चों ने लॉकडाउन अवधि के दौरान कई नई चीजें सीखीं जैसे कि हैंडबैग, पर्स, ईयर रिंग्स, कार्ड, ग्रीटिंग कार्ड, फूल, पेपर फ्रॉग, हवाईजहाज व रॉकेट जैसे खिलौने, फोटो फ्रेम, मास्क

आदि बनाना। आर्ट क्लास में हमने डॉ. अब्दुल कलाम जी और डॉ. बी.आर. अम्बेडकर जैसी शख्सियतों के अलावा प्रकृति, फूल, गुड्डे-गुडिया और इंसानी आकृतियों के पेंसिल स्केच बनाना सीखा।

पर्यावरण दिवस पर जिम्मेदार नागरिकों का भूमिका निभाते हुए हमने अपने परिसर के चारों ओर पौधे लगाए और प्रकृति, फूल और पर्यावरण से संबंधित मुद्दों पर चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की। हमने कई व्यंजन बनाने सीखे। हमने अपनी होम सिस्टर के जन्मदिन के लिए केक भी बनाया। इतना ही नहीं, हमने दाल, सांभर, करमानी, बिरयानी, कबाब, अंडा चावल, पूरी, चपाती आदि बनाना भी सीखा। हमने हमारी सीनियर शर्ली के जन्मदिन के

लिए एक डॉस भी कोरियोग्राफ किया। कार्यक्रम खूब मस्ती भरा रहा और सभी छात्रों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। डिजिटल मोर्चे पर हमने टाइपिंग और एमएस ऑफिस जैसे बुनियादी चीजें कंप्यूटर पर सीखीं। हमारे कैम्पस में शांतिपूर्ण अध्ययन और खुद को शिक्षित करने के लिए एक पुस्तकालय भी है। लॉकडाउन में हमने कई कहानियां सीखीं और अपने जूनियर्स को सिखाईं और समझाईं। मजबूत और स्वस्थ रहने के लिए हम योजना योग करते थे। कुछ लड़कियों ने छोटे बच्चों को पढ़ाना शुरू किया। बच्चों ने स्वतंत्रता सेनानियों, सामान्य ज्ञान और विज्ञान के बारे में क्विज भी आयोजित की। बड़े बच्चों ने छोटे बच्चों के लिए खेल स्पर्धाएं आयोजित कीं। बड़े बच्चों ने थ्रो बॉल, खो-खो, कबड्डी जैसे आउटडोर गेम्स खेले।

हम महीने के अंत में केक काटकर और विशेष व्यंजनों के साथ फैमिली डे और जन्मदिन मनाते थे। नृत्य, नाटक, चुटकुले जैसी गतिविधियाँ नियमित होती थीं। हमने जाति व जेंडर, अखबारों, वैक्सिनेशन आदि के बारे में सत्रों में भी भाग लिया। इनसे न चीजें सीखने में मदद मिली। हम पर्यावरण दिवस, बड़ी हस्तियों की जयंतियां और त्योहार भी मनाते थे।

महामारी ने हमें साफ-सफाई के बेहतर तरीके भी सिखा दिए।

चंदन, लक्ष्मी के, मणि, धनलक्ष्मी, रोजी, संध्या, गीता, ऐश्वर्या, आशा के, अमुदा

एएनसी रेनबो होम, बेंगलुरु



LEARNING IS SO BEAUTIFUL



Different forms of creativity bloom together
Art and craft from children of Bala Tejassu Rainbow Home, Hyderabad

Hanging the creativity tools

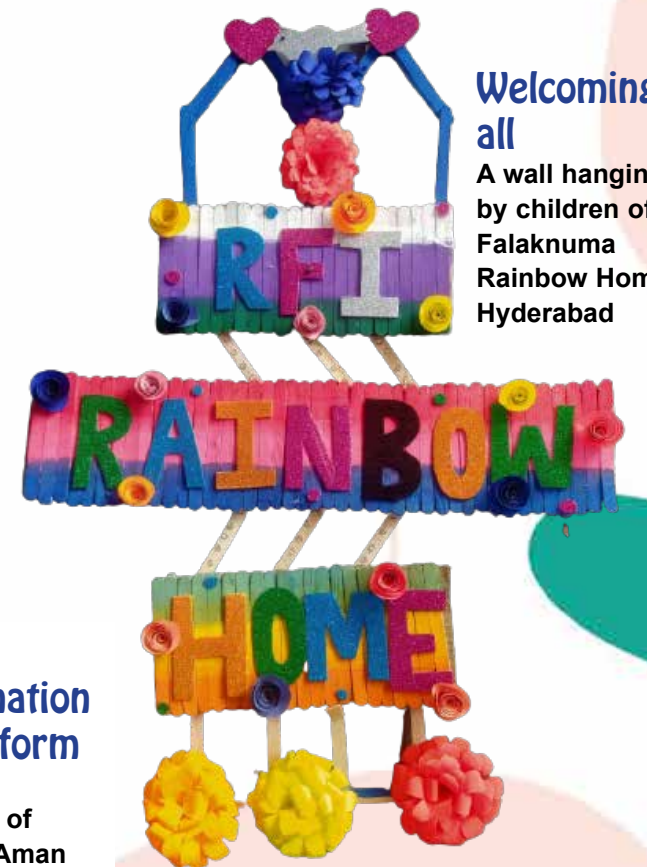
G. Chandana, SRD Rainbow Home, Hyderabad



REDMI NOTE 8 PRO AI QUAD CAMERA

When imagination takes form

Idols by children of Umang Aman Sneh Ghar, Kumhrar, Patna



Welcoming all

A wall hanging by children of Falaknuma Rainbow Home, Hyderabad

RAINBOW SATHI • రేనబో సాథి • రెయిన్ బో సాథి • గెయిన్ పో సాత్తి • ర్నాంబో సాథి • రైనబో సాథి

RAINBOW SATHI • రేనబో సాథి • రెయిన్ బో సాథి • గెయిన్ పో సాత్తి • ర్నాంబో సాథి • రైనబో సాథి



Crafting wishes
Greeting cards made by children of Rainbow Homes, Bengaluru



Paper beautiful
Different forms of designs in quilling by children of Umang Aman Sneh Ghar, Kumhrar, Patna



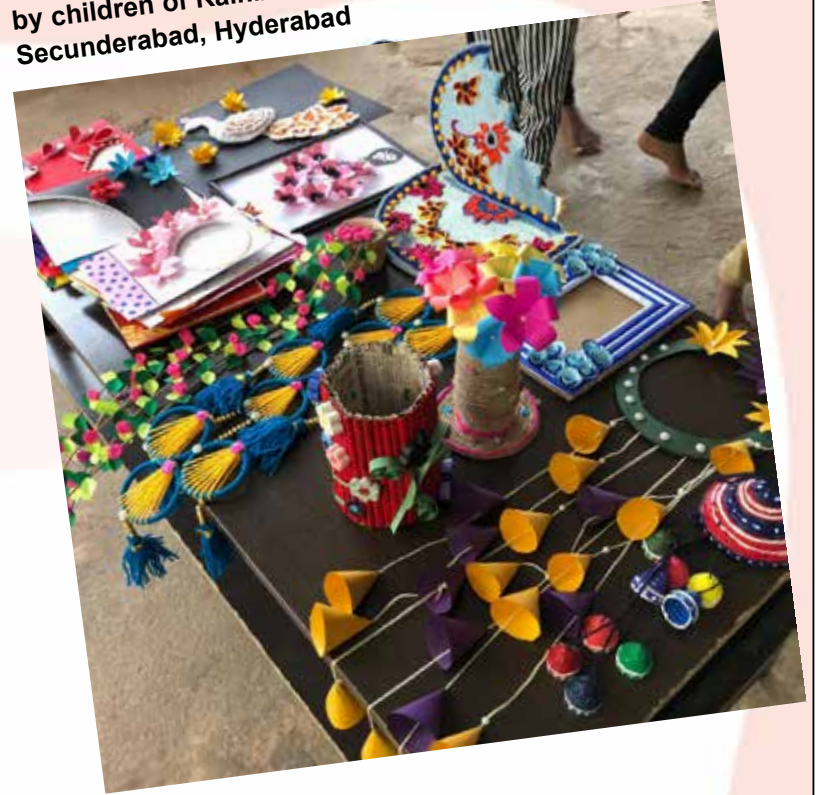
Jewellery to wear
Ear-rings made of quilling by children of Rainbow Homes, Bengaluru

Lines speak a lot
Beautiful designs on paper by Suparna Malakar, 10th Class, Rainbow Home, Kolkata



Traditional art in modern way
Beautiful wall hangings by children of Falaknuma Rainbow Home, Hyderabad

Jewels on paper
Different types of jewellery and other craft made by children of Rainbow Home, Lalapet, Secunderabad, Hyderabad



Blooming ideas
B. Kavya, 10th Class, SRD Rainbow Home, Hyderabad



Hyderabad

Different ideas put together

We did art and craft as part of the clubs during this Covid lockdown and also learned how to use waste material. We learned and made wall hanging, greeting cards, flowers, flowerpots in art and craft. Also, Somuya and Shobhana akka, taught us every Saturday how to decorate our home with waste material. Our whole peer group did a very interesting new idea. Instead of wasting time in Covid lockdown, we watched it online on YouTube and craft learnings at home. We felt happy. We spent time with our friends doing art and craft. We had different ideas, but we put all our ideas together and it was so satisfying to see.

G. Naveena, 9th Std, ARUN Rainbow Home Lalapet, Secunderabad



మేము ఈ Covid పోలిడోస్ లో క్లబ్స్ లో భాగంగా ఆర్ట్ అండ్ క్రాఫ్ట్ చేశాము. ఇంకా వేళ్ల మెటీరియల్ ని ఎలా ఉపయోగించాలో కూడా తెలుసుకున్నాము. Art and craft లో వాల్ హాంగింగ్, గ్రీటింగ్ కార్డ్స్, ఫ్లవర్స్, ఫ్లవర్ పాట్స్ చేయడం నేర్చుకున్నాము మరియు చేశాము. ఇవ్వని చేయడం ద్వారా మాలో క్రియేటివ్ అండ్ థింకింగ్ స్కిల్స్ ని డెవలప్ చేసుకున్నాము.

ఇంకా మాకు ఎవరి సాల్వర్స్ congenit organization నుండి సామ్యు అండ్ శోభన అక్క వాళ్లు వేళ్ల మెటీరియల్ తో మన హోమ్ ని ఎలా డెకరేట్ చేయాలో నేర్పించారు. ఇంకా అక్క వాళ్లు నేర్పించినవి నక్క, వీక్ లో మేము చేసి చూపిస్తాము... కావున మా పీర్ గ్రూప్ మొత్తం చాలా ఇంట్రస్టింగ్ గా కొత్త కొత్త ఐడియా తో చేశాము. ఈ కేవల పోలిడోస్ లో టైం వేళ్ల చేయకుండా ఆన్లైన్ తో పాటు యూట్యూబ్ లో చూసి క్రాఫ్ట్ చేశాము. మాకు ఇవ్వని చేస్తుంటే హ్యాపీ గా అనిపించింది. టైం ని మా ఫ్రెండ్స్ తో స్పెండ్ చేస్తూ ఆర్ట్ అండ్ క్రాఫ్ట్ చేశాము.

ఆర్ట్ అండ్ క్రాఫ్ట్ చేసేటప్పుడు చాలా హ్యాపీ గా అనిపించింది. అంతే మా అందరినీ ఐడియాస్ ఒకే విధంగా లేవు. మా అందరి ఐడియాస్ different గా ఉన్నాయి. మా అందరి ఐడియాస్ కలిపి చేసినవి చూసి మేము చాలా హ్యాపీ గా ఫీల్ అయ్యాము.

अलग-अलग विचारों का मेल

हमने इस कोविड लॉकडाउन के दौरान क्लबों के हिस्से के रूप में आर्ट एंड क्राफ्ट में हिस्सा लिया और बेकार सामान का उपयोग करना भी सीखा। हमने आर्ट एंड क्राफ्ट में वॉल हैंगिंग, ग्रीटिंग कार्ड, फूल, फ्लोवर पॉट बनाना सीखा। साथ ही, सौम्या और शोभना अक्का, हमें हर शनिवार को सिखाते थे कि कैसे अपने घर को बेकार सामग्री से सजाया जाए। हम सब दोस्तों के समूह में यह ख्याल आया कि कोविड लॉकडाउन के दौरान समय बर्बाद करने के बजाय, हम ऑनलाइन यूट्यूब पर भी आर्ट एंड क्राफ्ट सीख लें। आर्ट एंड क्राफ्ट करते हुए हम अपने दोस्तों के साथ समय बिताते थे। हम सबके विचार अलग-अलग बेशक हैं लेकिन उन्हीं अलग-अलग ख्यालों को मिलाकर साथ लाने से कितना संतोष मिलता था।

जी. नवीना, 9वीं कक्षा, अरुण रेनबो होम, लालापेट, सिकंदराबाद

New learning through Zoom...

The Covid 19 Pandemic has resulted in schools shut all across the world. Globally over all children are out of classrooms. Now temporarily education has

changed dramatically with the e-learning method.

As part of our daily schedule we are attending online classes in smart TV, computers and laptops. It is very interesting and exciting to us. We never imagined that our generation will have to depend on online teaching. But in comparison to offline classes online classes are very difficult to understand. Every time we may not be having good network connection. Besides, we might be able to learn theory part of our subject online, but experimental activities can't be done online.

Besides our subject classes, we are also attending many online sessions like art therapy, yoga, storytelling, dance etc. All these are very interesting and enjoyable to learn in online. We are meeting



new friends from different organisations through online classes.

Through online we also came to know about different apps like Zoom, cloud meeting,

Microsoft teams, go to meeting app, Google meet etc. This all is a new learning experience.

K. Sushmitha, Degree 1st year, ARUN Rainbow Home Lalapet, Secunderabad

नए ऐप से अब नई तरह की पढ़ाई

कोविड 19 महामारी के परिणामस्वरूप दुनिया भर में स्कूल बंद हो गए हैं। वैश्विक स्तर पर सभी बच्चे कक्षा से बाहर हैं। अब शिक्षा में अस्थायी रूप से लेकिन नाटकीय बदलाव आया है और ध्यान-ई-लर्निंग की तरफ केंद्रित हो गया है।

हमारे दिनचर्या के अंग के रूप में हम स्मार्ट टीवी, कंप्यूटर और लैपटॉप में ऑनलाइन कक्षाओं में भाग ले रहे हैं। यह हमारे लिए बहुत ही रोचक और रोमांचक है। हमने कभी नहीं सोचा था कि हमारी पीढ़ी ऑनलाइन कक्षाओं से पढ़ेगी। लेकिन तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो ऑनलाइन क्लास में समझना बहुत मुश्किल हो जाता है। वैसे भी हर समय

हमारे पास अच्छा नेटवर्क कनेक्शन तो हो नहीं सकता। फिर थ्योरी वाले विषय तो ऑनलाइन समझ भी लिए जाते हैं लेकिन प्रैक्टिकल का काम तो ऑनलाइन नहीं हो सकता।

महामारी के दौर में केवल पढ़ाई ही ऑनलाइन नहीं हो रही बल्कि बल्कि हम कला चिकित्सा, योग, कहानी, नृत्य आदि जैसे कई ऑनलाइन सेशन में भाग ले रहे हैं। इन्हें ऑनलाइन सीखना बहुत ही रोचक और आनंददायक है। ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से विभिन्न संगठनों के नए दोस्तों से भी मिल जाते हैं।

ऑनलाइन पढ़ाई के कारण हम अलग-अलग ऐप जैसे जूम, क्लाउड मीटिंग, माइक्रोसॉफ्ट टीम, गो टू मीटिंग ऐप, गूगल मीट आदि भी जान-समझ ले रहे हैं।

के. सुष्मिता, अरुण रेनबो होम लालापेट, सिकंदराबाद

Hyderabad

Pleasure of cooking is amazing

Cooking is also an art. The pleasure of cooking is second to none. Nowadays, there are many people who buy food from curry points. During lockdown we occasionally learned to cook chicken by helping the home mothers. One Sunday all our friends had chicken together. We all had a lot of fun. After we cooked food ourselves in the kitchen, then we understood the hard work our home mothers have to put in daily. All our Home Mothers at Rainbow Homes are so loving, so cheerful, so hard working in taking care of us that we felt so thankful that they cook every day for us.

P. Vennela, P. Rasanya, K. Sushmitha, Ch. Chamundi and K. Lavanya, ARUN Rainbow Home Lalapet, Secunderabad



खाना पकाने के आनंद की बात ही अलग है

खाना बनाना एक कला है। खाना पकाने का आनंद किसी से पीछे नहीं है। आजकल बहुत से लोग हैं जो करी पॉइंट से खूब खाना खरीदते हैं। लॉकडाउन के दौरान फुर्सत के समय कुछ मर्तबा हम होम की मदर्स की मदद से चिकन बनाना सीखते थे। एक रविवार हमारे सभी दोस्तों ने एक साथ चिकन खाया। हम सबने खूब मस्ती की। जब हमने किचन में खुद

खाना पकाया तो हमें समझ में आया कि रोजाना हमारी होम मदर्स कितनी मेहनत करती हैं। हमारी सभी होम मदर्स बेहद प्यारी, खुशदिल व मेहनती हैं कि हम इस बात के लिए बेहद शुक्रगुजार हैं कि वे रोजाना हमारा इतना ध्यान रखती हैं।
पी. वेनेला, पी. रसन्धा, के. सुष्मिता, सीएच. चामुंडी और के. लावण्या, अरुण रैनबो होम लालापेट, सिकंदराबाद

వంట చేయడం అనేది ఒక కళ. వంట చేయడంలో వుండే ఆనందం ఇంకెందులోను లేదు. ప్రస్తుత కాలం లో కూర చేయడం మన వల్ల కాదంటూ కర్రీ పాయింట్లను బోపించే వారు చాల మంది ఉన్నారు. మరి చేసుకోవాలనిపిస్తే ఏ అలు కర్రీస్ కోడిగుడ్డు కర్రీస్ పరిమితం అవుతారు. ఈ ఉరుకుల పేరుకుల జీవితంలో వంట నేర్చుకునే సమయం, తీరిక ఎక్కడుంది. ఇలా అనుకునే వాళ్ళందరికీ ఓ మాట. ఆ సమయం, తీరిక మేము తెచ్చుకొని అప్పుడప్పుడు హెమా మదర్ కి హెల్ప్ చేస్తూ చికెన్ వండడం నేర్చుకున్నాం. ఒక సందే రోజు మా ఫ్రెండ్స్ అందరం కలిసి చికెన్ చేశాము. ఫస్ట్ చేయడం వలన ఎలా ఉంటుందో అనుకున్నాం. పిల్లలందరూ చాల బాగుందని అభినందించడం లో చాల హ్యాపీ గ ఫీల్ అయ్యాము. మా అందరికీ చాల సంతోషం కలిగింది. మా రెయిన్ బో హెమా పిల్లలందరికీ హెమా మొథర్స్ చాలా ప్రేమగా, సంతోషంగా, మా కోసం ఎంతో కష్టపడి ఇష్టంగా ప్రతిరోజు వంట చేసి పెట్టడం మాకు చాలా హ్యాపీ గ అనిపించింది.

నా పేరు కే.లావణ్య . నేను లైన్స్ class చదువుతున్నాను. ఇంటర్నెషనల్ యోగ డే సందర్భంగా యోగ అనేది అందరికీ ఇంపార్టెంట్ కానీ మేము యోగ చేయడానికి అంత ఇష్టపడేవాళ్ళం కాదు. అంతేకాక స్కూల్ ఉండడం వలన పైం కూడా అంతగా ఉండేది కాదు. అందుకు కొన్ని ఆసనాలు మాత్రమే చేసేవాళ్ళం. కొత్తగా నేర్చుకోవడానికి పైం ఉండేది కాదు. కానీ covid తర్వాత యోగ చేయడానికి కొత్త ఆసనాలు నేర్చుకోవడానికి పైం కూడా ఉంటుంది. మేముందరం యోగ కోసం అప్పటి కంటే ఇప్పుడు వన్ hour ఎక్కువ చేస్తున్నాం. కొత్త ఆసనాలు కూడా నేర్చుకోవడం వలన ఇంట్లో అనేది చాల వస్తుంది. మేము మార్చింగ్ చేయడమే కాకుండా యోగ అప్లైన్ classes కి కూడా అటెండ్ అవుతున్నాము. అంతేకాక జూన్ 21 రోజు ఇంటర్నెషనల్ యోగ డే ఎందుకు పెట్టారు. యోగ అనేది ఎంత ఇంపార్టెంట్ ఓ తెలుసుకున్నాము. ఆ రోజు మాకు వచ్చిన ఆసనాలే కాకుండా కొత్త ఆసనాలు కూడా నేర్చుకున్నాం. ఆలా మేము ఇంటర్నెషనల్ యోగ డే ని కూడా మా హెమా లో సెలబ్రేట్ చేసుకున్నాము. మేముందరం యోగ చేయడం వలన హెల్త్ గ ఉంటూ ఈ యోగ గురించి మా పేరెంట్స్ కి కూడా చెప్పగలుగుతున్నాం.

Learning Yoga gives us strength

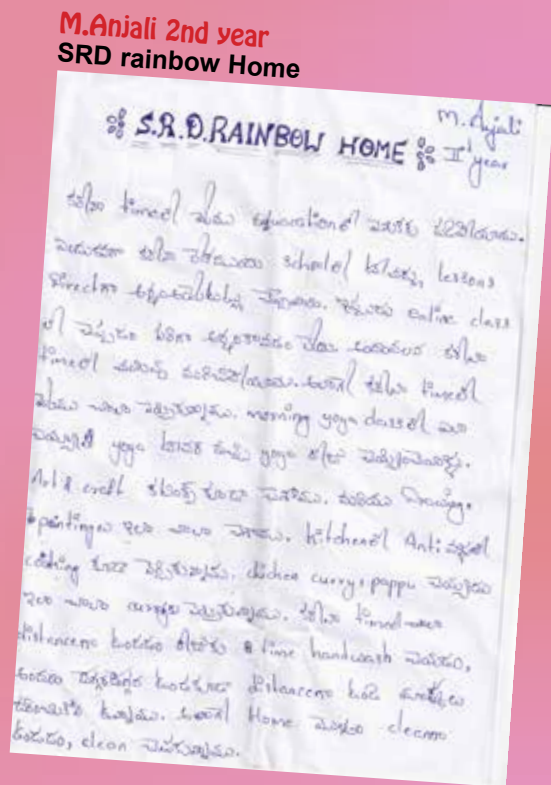
Yoga is important for everyone. On the occasion of International Yoga Day we all performed yoga but earlier we were not very fond of doing yoga. There was also lack of time to learn. Now we are all doing more than one hour yoga every day. Learning new asanas also brings a lot of interest. We are also attending yoga online classes in the morning. We have learned how important yoga is for our physical well-being. Therefore, we celebrated the International Yoga Day at our Home.

K. Lavanya, 10th Std, ARUN Rainbow Home Lalapet, Secunderabad



योग सीखने से मिलती शक्ति

योग सभी के लिए महत्वपूर्ण है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर हम सभी ने योग किया। पहले हमें योग सीखने का इतना उत्साह नहीं रहता था। उसके लिए इतना समय भी नहीं होता था। लेकिन अब हम सभी रोजाना एक घंटे से ज्यादा योग करते हैं। नए आसन सीखने की भी हमारे अंदर काफी रुचि रहती है। हम सुबह ऑनलाइन योग कक्षाओं में भी भाग ले रहे हैं। हमने जाना है कि योग शारीरिक सेहत के लिए कितना महत्वपूर्ण है। इसीलिए हमने अपने होम में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया।
के. लावण्या, 10वीं, कक्षा अरुण रैनबो होम लालापेट, सिकंदराबाद



Gouthami MEC Second Year 17Years Bala Teajssu Rainbow Home



Chennai

CHALLENGES in education during COVID-19

COVID-19 has caused closure of schools across the globe. A recent UNICEF report stated that over 247 million children enrolled in primary and secondary schools in India were impacted by the closure of schools. Globally, schools for more than 168 million children have been completely closed for over a year now. Though education space has shifted to remote learning and digital platforms, the penetration in India is poor with less than 24 percent of the households having access to internet pre-covid.

The situation is no different in Rainbow Homes. More than 60 percent of the children were sent to live with their families when the lockdown was announced. Overtime, many of them have returned to the homes. However, a brief survey suggested that nearly about 60 percent of the children living with their families didn't have access to smartphones. Even among the rest, children had to share smartphones with their family members, which meant that they couldn't be available for online classes all the time. Only about 3 percent mentioned that they were attending some form of remote learning sessions. In Tamil Nadu, the State government released a TV channel called "Kalvi TV" where educational sessions were broadcast for different age groups. However, around 9 percent mentioned that they didn't have access to a TV. Among those who did have access, the usage percentage was very low indicating that free broadcasts alone cannot be sufficient to ensure learning.

In order to ensure that children continue learning, following interventions were undertaken:



Online classes: For those with access to smartphones, online

classes with educational institutions, NGOs and volunteer organizations, resource persons and experts were organized. For children staying at the Rainbow Homes, these classes have come in handy as children continued to be engaged in some form of learning throughout.



Follow-up over phone calls:

Teachers contacted children living with their families over phone, at least once or twice a week. During these calls,

60 percent of the children living with their families didn't have access to smartphones.

168 million children have been completely closed for over a year now.

India is poor with less than **24 percent** of the households having access to internet pre-covid.

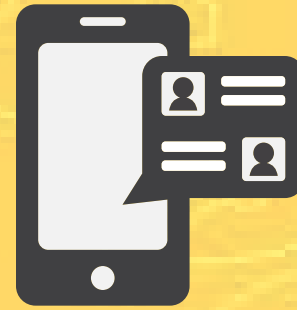
children were given some learning tasks such as art work using waste materials, homework using study materials already available with the children, etc. Children watching Kalvi TV were also followed up on their learnings from the broadcasts.



Field visits: In certain cases, home team made field visits and attempted to conduct certain learning activities for children during the visit. However, the scope and impact of the same was limited due to various constraints, noted later in this document.

Even though the above interventions were implemented by the home team, there were

various constraints to remote learning such as:



Challenges in remote learning:

a. Access to smartphones: More than 70 percent of the children do not have access to smartphones. Even among those who have access, it is not access at free will.

Most families have only one smartphone, which is usually used by the parent. They take it with them when they go out for work, thus leaving the child not being able to attend the classes during the day. Another challenge is also that those with access to smartphones sometimes do not have access to unlimited internet facilities, leading to poor or slow network.

b. Usage: Children sometimes are not aware about how to use different platforms of online learning and need additional support in learning to use them. However, other members in the family are also not aware and can't provide any such support to the children.

c. Environment of learning: Children are having to attend online classes from their homes. There is no separate space for study. Usually, all family members are in the same room. This often distracts the children. There is also lack of supportive equipment such as headphones, nearby charging points etc.

Challenges in community visits:

a. Learning environment: When staff visit the households, often there is no room or space to sit and conduct classes at length. Many times, staff have to stand on the roadside to conduct the classes. It is not very conducive for learning as the child is also not able to concentrate.

b. Availability of children: Once staff reach the locality, sometimes children are not available to attend the classes due to various family reasons. There is a long waiting time and sometimes children are available only for a very short duration. This leads to inefficiency in the teaching learning process.

कोविड: शिक्षा की चुनौती



कोविड-19 के कारण दुनिया भर के स्कूलों को बंद करना पड़ा। यूनिसेफ की हाल की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित 24.7 करोड़ से अधिक बच्चे पिछले साल यानी 2020 में स्कूलों के बंद होने से प्रभावित हुए हैं। वहीं विश्व स्तर पर, पिछले एक साल से 16.8 करोड़ से अधिक बच्चों के लिए स्कूल पूरी तरह से बंद रहे हैं। हालांकि शिक्षा का दायरा अब रिमोट शिक्षा और डिजिटल प्लेटफॉर्म की ओर स्थानांतरित हो गया है, लेकिन भारत में इंटरनेट की मौजूदगी कोरोना से पहले 24 प्रतिशत से भी कम आबादी के लिए थी।

रेनबो होम्स में भी स्थिति अलग नहीं थी। लॉकडाउन की घोषणा के वक्त 60 फीसदी से ज्यादा बच्चों को उनके परिवार के साथ रहने के लिए भेज दिया गया था। धीमे-धीमे, उनमें से कई होम्स में वापस लौट आए थे। हालांकि, एक संक्षिप्त सर्वेक्षण ने बताया कि अपने परिवार के साथ रहने वाले लगभग 60 प्रतिशत बच्चों के पास स्मार्टफोन तक नहीं है। बाकि बच्चे बच्चों को अपने परिवार के सदस्यों के साथ स्मार्टफोन साझा करना पड़ा। जिसका अर्थ यह है कि वे हर समय ऑनलाइन कक्षाओं के लिए उपलब्ध नहीं हो सकते थे। केवल 3 प्रतिशत ने ही उल्लेख किया कि वे किसी न किसी रूप में रिमोट शिक्षा सत्र में भाग ले रहे थे। तमिलनाडु में, राज्य सरकार ने "कलवी टीवी" नामक एक टीवी चैनल जारी किया, जहां विभिन्न आयु समूहों के लिए शैक्षिक सत्र प्रसारित किए गए। हालांकि, लगभग 9 प्रतिशत ने बताया कि उनके पास टीवी तक की उपलब्धता नहीं है। जिन लोगों के पास उपलब्धता थी भी, उनमें उसके इस्तेमाल का प्रतिशत बहुत कम था जो यह बताता है कि खाली मुफ्त प्रसारण भर से पढ़ाई सुनिश्चित नहीं की जा सकती।

लिहाजा, यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चे सीखते रहें, हमारी तरफ से निम्नलिखित हस्तक्षेप किए गए:

क) ऑनलाइन कक्षाएं: स्मार्टफोन तक पहुंच रखने वालों के लिए, शैक्षणिक संस्थानों, गैर सरकारी संगठनों और स्वयंसेवी संगठनों, संसाधन व्यक्तियों और विशेषज्ञों के साथ ऑनलाइन कक्षाएं आयोजित की



c. Interrupted learning: Even if children attend the class during home visits, there are interruptions as the next home visit will be after several days. There is no continuity in the learning process often leading to break in learning outcomes.

Way forward

Schools have been closed for over a year; it is key that children are provided opportunities to continue their learning so as to be able to prevent any reversing of the progress made in education thus far. Remote learning alone cannot be considered as an alternative due to the constraints noted above. Though it is deemed best that children return to the homes and engage themselves in learning activities, in cases where children are not able to, a blended learning model needs to be adopted. A mixture of phone calls, online sessions and structured field visits with set agenda and learning goals needs to be adopted. Rainbow Homes, as an organization, has invested in capacity building of teachers to rise up to this challenge in the past year. However, such capacity building cannot be limited to just learning how zoom functions but needs to cater to the larger goal of ensuring children learn and progress in their learning outcomes. Such outcome oriented plan of action and appropriate capacity building of teachers is highly required.

गई। रेनबो होम्स में रहने वाले बच्चों के लिए, ये कक्षाएं काम में आई हैं क्योंकि बच्चे पूरे समय किसी न किसी रूप में सीखने में लगे रहते हैं।

ख) फोन कॉल पर फॉलोअप: शिक्षकों ने अपने परिवार के साथ रहने वाले बच्चों से फोन पर संपर्क किया, सप्ताह में कम से कम एक या दो बार। इन कॉलों के दौरान, बच्चों को कुछ सीखने के कार्य दिए गए जैसे कि बेकार सामग्री का उपयोग करके कला कार्य, बच्चों के पास पहले से उपलब्ध अध्ययन सामग्री का उपयोग करके गृहकार्य आदि। कलवी टीवी देखने वाले बच्चों को भी प्रसारण के दौरान सीखी गई बातों को पूछा गया।

ग) फील्ड विजिट: कुछ मामलों में, होम टीम ने फील्ड विजिट भी की और उन्हीं के दौरान बच्चों के लिए कुछ सीखने की गतिविधियों का संचालित करने का प्रयास किया। हालांकि, इसका दायरा और प्रभाव विभिन्न बाधाओं के कारण सीमित था, जिसे बाद में इस दस्तावेज में नोट किया गया था।

हालांकि होम टीमों ने इस तरह के कई हस्तक्षेप करने की कोशिश की, फिर भी दूरस्थ शिक्षा के रास्ते में कई तरह की बाधाएं थीं जैसे कि:

I. दूरस्थ शिक्षा की चुनौतियां:

क) स्मार्टफोन की उपलब्धता: 70 प्रतिशत से अधिक बच्चों के पास स्मार्टफोन उपलब्ध नहीं हैं। यहां तक कि जिनके घरों में उपलब्ध हैं, उनमें भी बच्चों को उसके अपनी इच्छा से इस्तेमाल की आजादी नहीं है। अक्सर परिवारों के पास केवल एक स्मार्टफोन होता है, जो आमतौर पर माता-पिता द्वारा उपयोग किया जाता है। जब वे काम के लिए बाहर जाते हैं तो वे इसे अपने साथ ले जाते हैं, जिससे बच्चा दिन में कक्षाओं में शामिल नहीं हो पाता है। एक और चुनौती यह भी है कि स्मार्टफोन की उपलब्धता वालों के पास असीमित इंटरनेट की सुविधाएं नहीं होती हैं।

ज्यादातर खराब या धीमे नेटवर्क की समस्या हो जाती है।

ख) प्रयोग: ऐसा भी होता है कि बच्चे ऑनलाइन पढ़ाई के विभिन्न प्लेटफॉर्मों का उपयोग करने के तरीकों के बारे में नहीं जानते हैं और उनका उपयोग करने के लिए सीखने में अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता होती है। लेकिन परिवार के बाकी सदस्य भी इसकी जानकारी न होने की वजह से बच्चों को कोई मदद नहीं दे पाते।

ग) सीखने का माहौल: बच्चों को अपने घरों से ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेना पड़ रहा है। लेकिन उनके घरों में पढ़ाई के लिए अलग से जगह तो होती नहीं। आमतौर पर परिवार के सभी सदस्य एक ही कमरे में रहते हैं। जाहिर है कि इससे बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई में ध्यान बंटता है। कई बार बाकी गैजेट्स जैसे हैडफोन, आस-पास के चार्जिंग पॉइंट आदि भी नहीं उपलब्ध होते।

II. फील्ड विजिट की चुनौतियां:

क) सीखने का माहौल: जब होम स्टाफ घरों में जाता है, तो अक्सर बैठने और लंबी कक्षाओं का संचालन करने के लिए कोई खाली कमरा या जगह नहीं होती। कई बार स्टाफ को क्लास के लिए सड़क किनारे बैठ कर ही सिखाना पड़ता है। यह सीखने के लिए बहुत अनुकूल नहीं है क्योंकि बच्चा भी अपना ध्यान केंद्रित करने में सक्षम नहीं होता।

ख) बच्चों की उपलब्धता: जब कर्मचारी इलाके में पहुंच जाते हैं, तो कभी-कभी विभिन्न पारिवारिक कारणों से बच्चे कक्षाओं में उपस्थित नहीं हो पाते हैं। टीचर्स को बच्चों का लंबा इंतजार करना पड़ता है और कभी-कभी बच्चे बहुत कम अवधि के लिए ही उपलब्ध होते हैं। इससे भी पढ़ने-पढ़ाने के काम में अड़ंगा लगता है।

ग) पढ़ने-पढ़ाने की दिक्कतें: फिर, होम विजिट में भले ही बच्चे क्लास ले भी लें, अगली क्लास का नंबर आते-आते कई दिन निकल जाते हैं। बच्चे पिछली क्लास की बातें भूल जाते हैं और पढ़ाई की निरंतरता में दिक्कत तो आती ही है।

आगे का रास्ता:

एक साल से अधिक समय से स्कूल बंद हैं, यह महत्वपूर्ण है कि बच्चों को अपनी शिक्षा जारी रखने के अवसर प्रदान किए जाएं ताकि उनकी अब तक शिक्षा में हासिल हुई प्रगति उलटी दिशा में न जाने लगे। हमने जिन सीमाओं का उल्लेख यहां किया है, उनके चलते केवल दूरस्थ शिक्षा को ही एक विकल्प के रूप में नहीं माना जा सकता है। सबसे अच्छा तो यही होता कि बच्चे होम्स में लौट आते हैं और वहां उनकी पढ़ाई की गतिविधियां चालू हो जायें। लेकिन जहां बच्चों का होम में तुरंत लौटना मुमकिन नहीं है, वहां कोई मिला-जुला मॉडल अपनाने की जरूरत है। इसमें फोन कॉल भी हों, ऑनलाइन सत्र रहें और एक तय एजेंडा और पढ़ाई के लक्ष्य के साथ फील्ड विजिट की जाएं तो बेहतर हो। रेनबो होम्स ने एक संगठन के बतौर पिछले साल भर में इस चुनौती का सामना करने के लिए शिक्षकों के क्षमता निर्माण में निवेश किया है। ध्यान यह भी रखना है कि इस तरह के क्षमता निर्माण का मतलब केवल यह सीखना-सिखाना नहीं होना चाहिए कि जूम कैसे काम करता है, बल्कि उनका बड़ा लक्ष्य यह होना चाहिए कि बच्चों तक शिक्षा पहुंचे और उसके सकारात्मक नतीजे सुनिश्चित किए जा सकें। ऐसी परिणामोन्मुखी कार्ययोजना और शिक्षकों की उपयुक्त क्षमता निर्माण की अत्यधिक आवश्यकता है।

Kolkata

KEEP MISSING THE OLD SCHOOL DAYS

After the outbreak of the coronavirus pandemic in March last year the government declared lockdown period of 21 days in the beginning. Later it was extended repeatedly as the infection was spreading. Everything came to a standstill. Schools, colleges, factories, many offices, shops were closed. There was no means of transport also. This was an unusual experience for us as I could not go to school for many months. My parents were also at home as the offices were closed.

Initially, I liked it because I did not have to study and could spend the whole day with my parents. Whenever we stepped out of the house, we had to wear masks, sanitize our hands and maintain a safe distance with people around us. As many shops were closed, it was difficult to buy the necessary things at right time. At home, we practiced hand hygiene and wash our hands frequently. Many people have lost their livelihood and students have lost the opportunity to go to school.

Schools decided that education would be imported through internet. But for most of the students in the rural areas, mobile phones were not available, so most of the students were deprived of getting education through internet. Among them some students from urban areas got the opportunity to get education through internet. There were many problems in carrying out studies. Due to bad network problem I was not able to study every day.

Slowly, as days went by, I started missing my school and friends. We could not go out to



meet friends nor have any guest come at home. Life was becoming difficult and stressful. We all waited for the lockdown period to end.

I used to go to school holding hands in hands with my friends. Now we have to do virtual classes with those friends. Same friends with whom I used to play now I have to keep social distance with them. Days, weeks and months are passing by but the outbreak of this disease does not seem to nearing its end.

**Sutopa Dolui, 16 yrs, Class X,
Loreto Rainbow Home, Sealdah, kolkata**

स्कूल के दिनों की याद सताती है

कोरोना वायरस महामारी के प्रकोप के बाद सरकार ने मार्च 2020 में शुरुआत में 21 दिनों की अवधि का लॉकडाउन घोषित किया गया था। बाद में लॉकडाउन को कुछ-कुछ दिन करके आगे बढ़ाया जाता रहा दिया गया क्योंकि संक्रमण तेजी से फैले ही जा रहा था। सब कुछ थम सा गया था। सभी स्कूल, कॉलेज, फैक्ट्रियां, कई दफ्तर और दुकानें

बंद हो गए। यहां तक कि यातायात का भी कोई साधन नहीं चल रहा था। यह मेरे लिए एक असामान्य अनुभव रहा क्योंकि मैं कई महीनों तक स्कूल नहीं जा पाई। दफ्तर बंद होने के कारण मेरे माता-पिता भी घर पर ही थे।

लॉकडाउन के शुरुआती दिनों में तो यह सब अच्छा लगा क्योंकि पढ़ाई नहीं करनी पड़ती थी और मैं पूरा दिन अपने माता-पिता के साथ बिता पाती थी जो कि आम दिनों में नामुमकिन था। जब भी हम घर से बाहर निकलते हैं तो हमें मुंह पर मास्क लगाना होता है, हाथों के लिए सैनिटाइजर लेकर चलना होता है और अपने आसपास के लोगों से सुरक्षित दूरी बनाए रखनी होती। दुकानें बंद होने से जरूरी सामान सही समय पर खरीदना मुश्किल हो रहा था। घर पर भी साफ-सफाई का खास ख्याल रखा जाने लगा। हम बार-बार हाथ धोते। लॉकडाउन के कारण बहुत से लोगों की रोजी-रोटी छिन गई और छात्रों ने स्कूल जाने का अवसर खो दिया।

स्कूलों ने फैसला किया कि शिक्षा को इंटरनेट के माध्यम से बच्चों तक पहुंचाया जाए। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादातर छात्रों के लिए तो स्मार्टफोन उपलब्ध नहीं था,

इसलिए वे इंटरनेट के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रहे। बस शहरी इलाकों के बच्चों को ही इंटरनेट के जरिये पढ़ाई करने का मौका मिल पा रहा था। जाहिर था कि हमारी पढ़ाई में भी काफी दिक्कतें आईं। नेटवर्क की समस्या के कारण मैं रोजाना पढ़ाई नहीं कर पाती थी।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, मुझे अपने स्कूल और दोस्तों की याद आने लगी। हम दोस्तों से मिलने के लिए बाहर नहीं जा सकते थे और न ही कोई मेहमान घर आ सकता था। जीवन कठिन और तनावपूर्ण होता जा रहा था। हम सभी बेसब्री से लॉकडाउन की अवधि खत्म होने का इंतजार कर रहे थे।

हमेशा मैं अपने दोस्तों के साथ हाथ में हाथ डाले स्कूल जाती थी। आज हमें उन दोस्तों के साथ स्क्रीन पर ही मुलाकात हो पाती है। मैं जिन दोस्तों के साथ खेलती थी, उनसे ही सामाजिक दूरी बनाकर रखनी पड़ती है। दिन, हफ्ते व महीने गुजरते जा रहे हैं, लेकिन इस महामारी का प्रकोप अपने अंत की तरफ जाता दिखलाई नहीं देता है।

**सुतोपा डोलुई, 16 साल, कक्षा X,
लॉरेटो रेनबो होम, सियालदह**



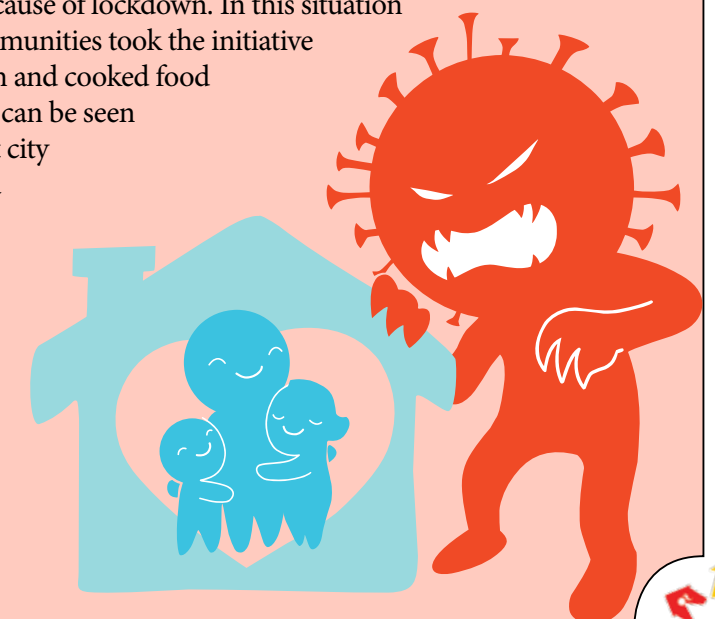
NO ONE EVER IMAGINED SUCH A SITUATION

The coronavirus pandemic started in China in late November 2019. Still, no one would have imagined that India would have to go for a nationwide lockdown from 21st March 2020. People never imagined that they will have to face such experience. All people- from school going kids to office going professionals- were trapped in their own homes.

Newspapers will daily have headlines of increasing number of infection and people dying from it. Nobody had any idea when it will come to an end. In developing countries like India, the death toll was rising, and poor were becoming poorer because of lockdown. In this situation the governments, voluntary organisations and communities took the initiative to provide free rations to people in need. Dry ration and cooked food were distributed. Kolkata is a big city where people can be seen on the streets all times. After corona lockdown that city is not buzzing anymore. Coronavirus has become a destroyer of a city's ethos.

Hey corona! Did you lose your destination or you have lost your way in this city and you do not want to leave now. Today because of you so many people have lost their dear ones, many people have to beg for food. How selfish are you!

**Madhumita Pal, 18 yrs,
CLASS XII,
Loreto Rainbow Home, Sealdah, kolkata**

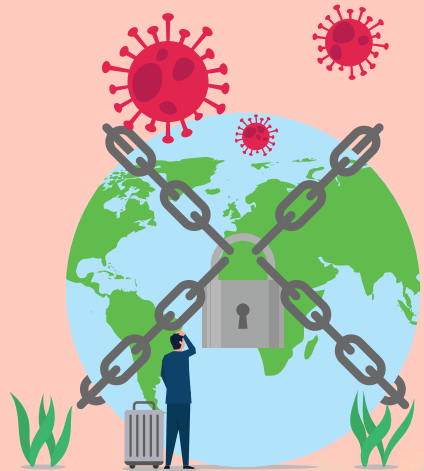


Kolkata

इस स्थिति की तो कभी किसी ने कल्पना नहीं की थी

को रोना वायरस महामारी नवंबर 2019 में चीन से शुरू हुई थी। लेकिन किसी ने ख्वाब में भी नहीं सोचा होगा कि 21 मार्च 2020 से पूरे भारत में लॉकडाउन लग जाएगा। इस तरह के अनुभव का सामना करने की तो किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी। इस वायरस की वजह से स्कूल जाने वाले छोटे-छोटे बच्चों से लेकर दफ्तर जाने वाले बड़ों तक सभी लोग अपने-अपने घरों में कैद हो गए।

रोजाना अखबारों में हम महामारी से बीमार होने वालों और जान गंवाने वाले लोगों की संख्या के बारे में पढ़ रहे। लेकिन इसका अंत कब होगा यह कोई नहीं जानता था। भारत जैसे विकासशील देश में मरने वालों की संख्या बढ़ रही थी और

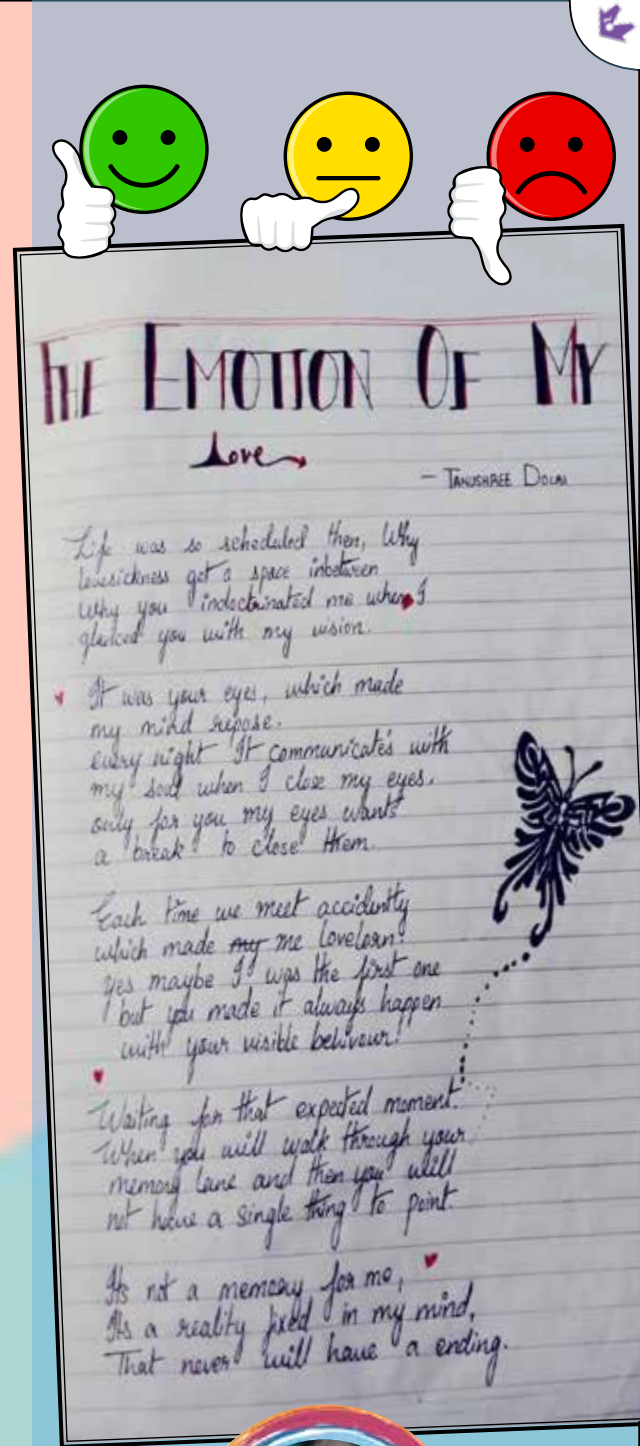


लॉकडाउन की वजह से गरीब और गरीब होते जा रहे थे। इस स्थिति में सरकारों, विभिन्न समुदायों और स्वयंसेवी संस्थाओं ने जरूरतमंदों को राशन देने की पहल की। सूखा राशन और तैयार खाना, दोनों बांटे गए।

कोलकाता एक बड़ा शहर है जहां हर समय लोग सड़कों पर देखे जा सकते हैं। लेकिन कोरोना लॉकडाउन के बाद शहर की चहल-पहल खत्म हो गई। कोरोनावायरस इस तरह शहर की जीवंतता को खत्म करने वाला बन गया।

हे कोरोना! क्या तुमने अपनी मंजिल से भटक गए हो या फिर इस शहर में खोकर अब यहां से जाना नहीं चाहते। तुम्हारी वजह से न जाने कितने लोगों ने अपने प्रियजनों को खो दिया, बहुतों को खाने के लिए भीख तक मांगनी पड़ गई है। कितने स्वार्थी हो तुम!

**मधुमिता पाल, 18 साल, कक्षा XII,
लॉरेटो रेनबो होम, सियालदह, कोलकाता**



Tanushree Dolai
Loreto Rainbow Home,
Sealdah, Kolkata

Prayer

ప్రార్థన

ప్రార్థన

God!
Thank you for this beautiful life as part of creation!
WE believe, we wish, to live in friendship and mutual respect with head held high, in courage and self confidence.
We believe, we wish that all human beings, whether men or women, live in equality, and in happiness, whatever their colour, caste, class, religion, region, language or abilities.
We believe that, we wish to strongly oppose divisive forces and ideologies that spread hatred and divide us and support democratic and non-violent actions for justice, humanity, truth and peace, taking injustice done to others as inflicted on us.
WE believe in, we wish to contribute our mite towards, the building of more humane and free world, in good health and joyful learning and spreading knowledge.
God!
We believe in, and wish to join our tiny hands with the multitude of the people in this ages-old divine journey of love.

ईश्वर अल्लाह
हमारी ये दुआ है कि इस दुनिया में कोई भी बच्चा ना हो जिसे भोजन प्यार सुरक्षा और शिक्षा न मिले और यह भी प्रार्थना है कि हम अपने आस पास सबकी जिंदगी में खुशी की रोशनी भर दे।

ఈశ్వర అల్లా జీసస్
నిమ్మల్ని నమ్మేల్లర ప్రార్థన
ఈ జగత్తినల్ని యావుదే మగు
ఆహార ప్రీతి, సురక్షత మత్తు
శిక్షణదింద వంజితరాగదిరలి
ఇదు నమ్మ ప్రార్థన
నమ్మ కాగూ నమ్మ సుత్తముత్తలిన
ఎల్లర జీవనదల్ని సంకూష
కాగూ ప్రీతియన్ను కరుణిసి.





NEWSLETTER OF RAINBOW HOMES

(for private circulation only)

RAINBOW SATHI • రేనబో సాథీ • రియన్స్ సాథి • గెయిన్పో శాత్తి • ర్నోబోలె సాథి • రైనబో సాథీ

RAINBOW SATHI • రేనబో సాథీ • రియన్స్ సాథి • గెయిన్పో శాత్తి • ర్నోబోలె సాథి • రైనబో సాథీ



Our Best COVERS



OPEN HEARTS, OPEN GATES

Rainbow Homes Program - ARUN works with Rainbow Homes (For girls) and Sneh Ghar (For boys) to empower children formerly on the streets to reclaim their childhood by providing Comprehensive Care Food, Shelter, Health and Education.

Rainbow Homes EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

Anuradha Konkepudi, Executive Director Email: reach@rainbowhome.in
Rainbow Homes Programme ARUN, 1-1-711/c/1, 1st floor,
Opp. vishnu Residency, Gandhinagar, Hyderabad - 80 Office No: 040-65144656

